दादी और बच्चा

दादी और बच्चा

दादी और बच्चा

दादी एक दिन जंगल में से गुज़र रही थीं.

अचानक वो रुक गयीं.

उन्होंने कुछ सुना.

दादी ने इधर-उधर देखा

पर उन्हें कोई चीज नहीं दिखी.

फिर दादी ने ऊपर देखा और

उन्हें सच में कुछ दिखा.
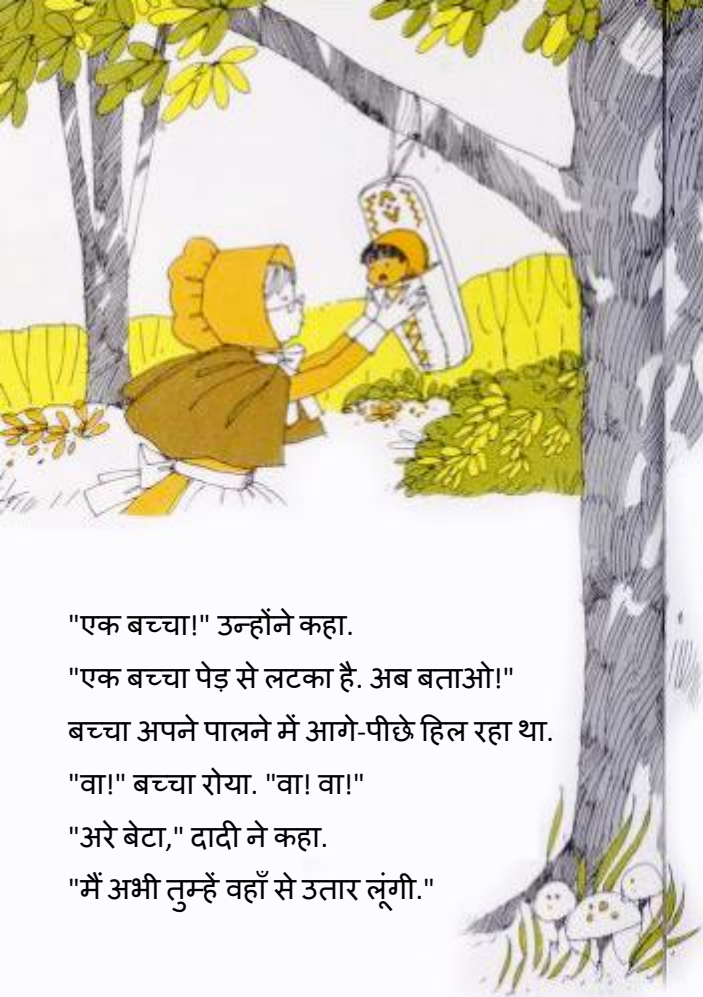
"एक बच्चा!" उन्होंने कहा.
"एक बच्चा पेड़ से लटका है. अब बताओ!"
बच्चा अपने पालने में आगे-पीछे हिल रहा था.
"वा!" बच्चा रोया. "वा! वा!"
"अरे बेटा," दादी ने कहा.
"मैं अभी तुम्हें वहाँ से उतार लूंगी."

दादी पेड़ पर चढ़ गयीं.
वह ऊपर पहुंचीं और बच्चे को नीचे ले आईं.
"वा! वा!" बच्ची ने कहा,
"दादी तुम्हारा ख्याल रखेगी."
बच्ची ने रोना बंद कर दिया.
"तुम्हें किसने पेड़ पर इस तरह लटकाया?"
दादी ने पूछा.

दादी ने कहा, "गनीमत है तुम
उन इंडियंस के हाथ नहीं लगे."
"तब बहुत भयानक होता.
तुम भाग्यशाली हो कि मैं वहां पहुँच गई.
मैं तुम्हें अपने साथ घर ले जाऊंगी."
दादी आगे चलीं. फिर वो रुक गयीं.
"मुझे लगा जैसे मुझे कुछ सुनाई दिया,"
दादी ने कहा.

उन्होंने चारों तरफ देखा.
उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया.
लेकिन कुछ तो ज़रूर था.
कुछ बड़ा और सिलेटी रंग का.
फिर वो चीज़ घुर्राई.

"ठीक है," दादी ने कहा.

"बाहर आओ नहीं तो मैं गोली मार दूंगी."

एक सिलेटी सिर झाड़ियों से बाहर निकला.

दो बड़ी आँखें, दादी को घूरती रहीं.

"अरे, इतना बड़ा कुत्ता," दादी ने कहा.

"चलो, एक अच्छा कुत्ता बनो,"
दादी ने कहा,
"नहीं तो मैं तुम्हारी पिटाई लगाऊंगी."
वो जीव फिर से घुर्राया.
"ठीक है," दादी ने कहा.
"तुम मार खाकर ही ठीक होगे."
फिर दादी ने उस जीव की
नाक पर कसकर
बंदूक मारी.

"चलो, मेरे साथ आओ.
मुझे हमेशा से एक कुत्ता चाहिए था.
अब तुम इस बच्चे की भी कुछ मदद करो," दादी ने कहा.
सिलेटी चीज झाड़ियों में से बाहर निकली.
वो दादी को देखकर घुर्राई.
"ओह, बंद करो," दादी ने कहा.
उस जीव ने अपने जबड़े बंद किये.

फिर उस जीव ने घुर्राना बंद कर दिया.
"चलो यह ठीक है," दादी ने कहा.
"पर मैं तुम्हें घर कैसे लेकर जाऊंगी?"
दादी ने इसके बारे में सोचा.
फिर उन्होंने सिर हिलाया.
"मैं तुम्हारी गर्दन के चारों ओर
अपने एप्रन की डोरी बाँध दूँगी.
उससे एक अच्छी रस्सी बनेगी."

दादी ने बच्चे को नीचे रखा.
उन्होंने अपना एप्रन उतारा.
उन्होंने अपने एप्रन की डोर
उस सिलेटी जीव के गले में बाँध दी.
सिलेटी जीव बस दादी को घूरता रहा.
हाँ, कोई और भी दादी को घूर रहा था.
आँखें, एक इंडियन की आँखें, दादी को घूर रही थीं.
लेकिन दादी ने उसे नहीं देखा.

दादी ने बच्ची और अपनी बंदूक को उठाया.

वह अपने रास्ते गयीं.

इंडियंस अपने रास्ते चले गए.

घर में दादी को असली रस्सी मिली.

उन्होंने सिलेटी जीव को

मेज के एक पैर से बांध दिया.

उन्होंने बच्चे को बिस्तर पर लिटाया.

"वा! वा!" बच्चा रोया.

"घुर्र ...घुर्र ... " सिलेटी जीव घुर्राया.

"अब बताओ," दादी ने कहा.

"क्या आप दोनों को भूख लगी है?

मैं आपकी भूख का इंतज़ाम कर सकती हूं."

सिलेटी जीव के लिए दादी कुछ मांस लाईं.

बच्चे के लिए वो कुछ दूध लाईं.

"अब देखो," उन्होंने कहा.

"खाकर आप लोगों को बेहतर महसूस होगा."

बच्चे ने "हाँ" कहा

और शायद सिलेटी जीव ने भी वही कहा.

"ज़रा देखो," दादी ने कहा. "छोटा बच्चा सो गया है."

फिर उन्होंने सिलेटी जीव को देखा.

"अब मैं तुम्हें देखूँगी," उन्होंने कहा.

"सबसे पहले मैं तुम्हें एक नाम दूँगी. एक नाम."

दादी ने कुछ देर सोचा.

"बस!" उन्होंने कहा.

"ऐडा! ऐडा! तुम्हारे लिए एक अच्छा नाम होगा."

"घुर्र ," ऐडा ने कहा.

"चुप बैठो!" दादी ने कहा,

"नहीं तो मुझे तुम्हारी दुबारा पिटाई लगानी होगी."

"वा!," बच्चे ने कहा.

"यह देखो, तुमने यह क्या किया," दादी ने कहा.

"चलो, ठीक है, जो किया वो किया,"

दादी ने बच्चे को उठाते हुए कहा.

"चलो मैं तुम्हें जाकर धोती हूँ," उन्होंने कहा.

"बच्चों को बार-बार धोना पड़ता है."

फिर दादी ने बच्चे को वापस बिस्तर पर लिटा दिया.

"मैं थोड़ा पानी लेकर आती हूँ," दादी ने कहा.

"ऐडा, तब तक तुम बच्चे का ध्यान रखना."

बच्चे को कोई और भी देख रहा था.

आँखें, इंडियन की आँखें, खिड़की में से देख रही थीं.

"अरे नहीं!" इंडियन ने कहा.

"एक भेड़िया! बड़ा खूंखार भेड़िया!"

दादी पानी लेकर वापस आईं.

"यह बर्तन पर्याप्त होगा," उन्होंने कहा.

फिर उन्होंने उस बर्तन में पानी डाला.

इंडियन उछल पड़ा.

"मुझे और मदद की ज़रुरत होगी,"

उसने कहा.

फिर इंडियन वापस अपने

शिविर में भागा हुआ गया.

"जल्दी, जल्दी करो!" उसने लोगों से कहा.

"जल्दी चलो. वह दादी फिर शरारत

कर रही है."
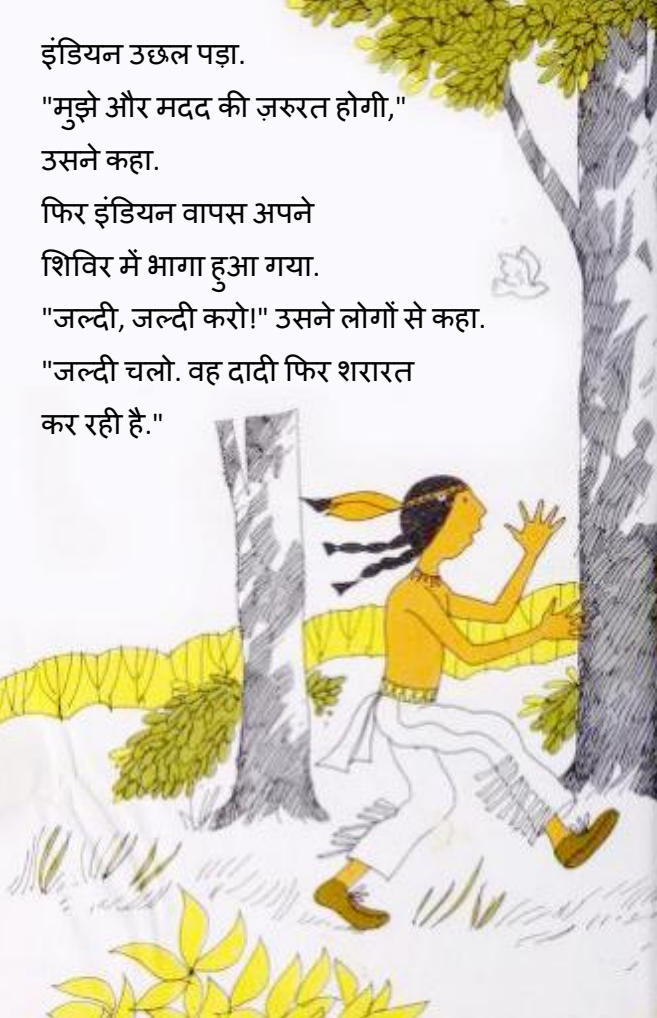
"हमें बताओ, हमें बताओ,"

इंडियंस ने पूछा.

"वो अभी क्या कर रही है?"

"दादी के पास हमारा एक

बच्चा है." इंडियन ने कहा.
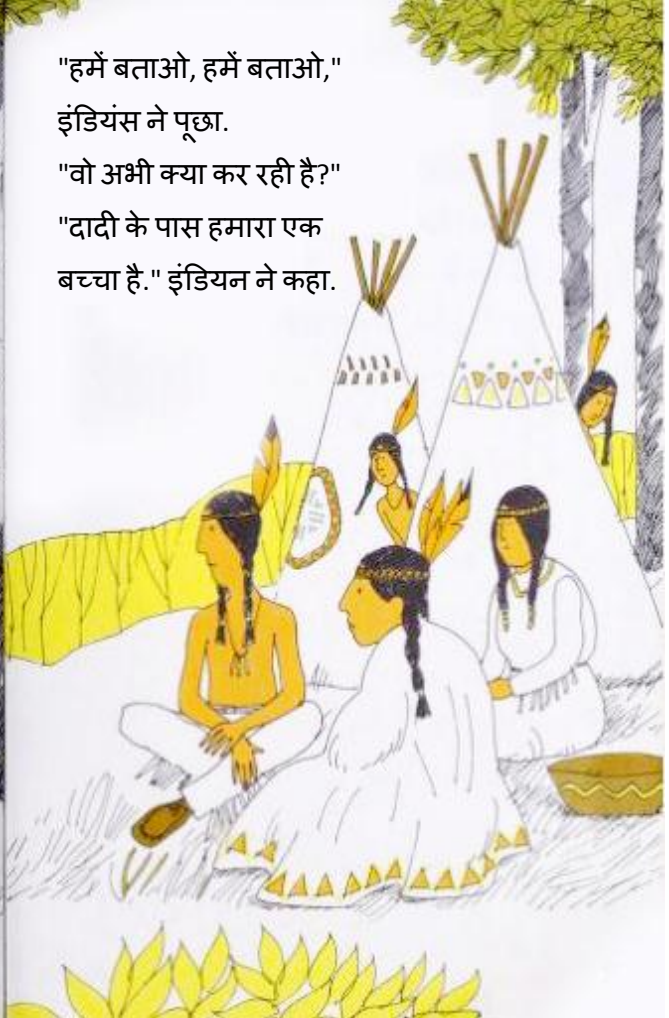
"अरे नहीं!" बाकी इंडियंस ने
रोते हुए कहा.
"वो उस बच्चे को पकाने और
भेड़िये को खिलाने जा रही है," इंडियन ने कहा.
"क्या?" मुखिया चिल्लाया.
"वह ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकती."
"नहीं नहीं!" बाकी इंडियंस चिल्लाए.
"हमें उसे रोकना होगा."
"पर कैसे?" प्रमुख ने कहा.
"आप जानते हैं कि
वो महिला मुश्किलें पैदा करती है."
एक इंडियन ने कहा, "हो सकता है हमें
उसे गोली मारकर शूट करना पड़े."
"नहीं नहीं!" प्रमुख ने कहा.
"हम ऐसा नहीं कर सकते."

"लेकिन कुछ ऐसा करना होना
चाहिए जो उसे रोके," एक और
इंडियन ने कहा.
"हाँ" प्रमुख ने कहा. "लेकिन हमें यह
काम जल्दी ही करना होगा.
आप सब सोचें, सब लोग ... ..
सोचें, सोचें, सोचें."
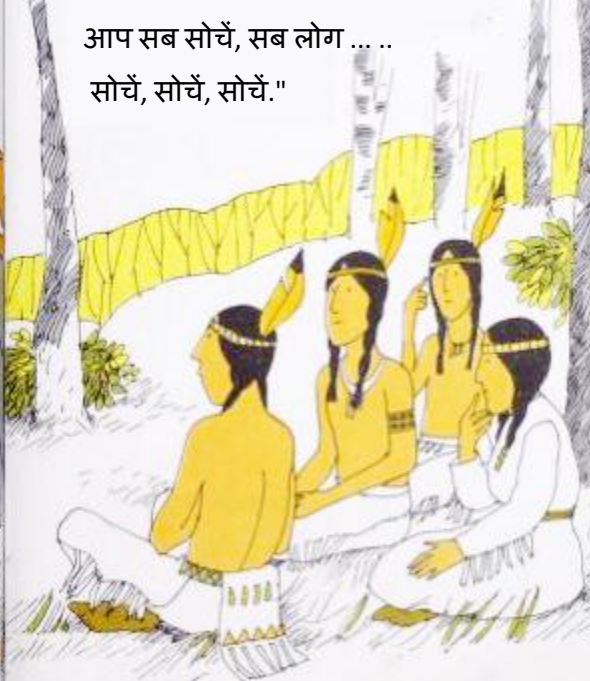
लेकिन दादी को सोचना नहीं पड़ा.

वह जानती थीं कि वो भूखी थीं.

उन्होंने बच्चे को नहलाया नहीं.

उसकी बजाय उन्होंने खुद के लिए

चाय और टोस्ट बनाए.

बच्चे ने कहा, "वा!,"

बच्चा दुबारा सोने चला गया.

ऐडा बैठ गई और बच्चे को देखती रही.

"देखो वो कितनी प्यारी है?" दादी ने कहा.

फिर दादी ने अपनी चाय खत्म की.

उसके बाद वो अपनी कुर्सी पर बैठी गयीं.

लेकिन ऐडा सिर हिला रही थी.

उसे गले में बंधी रस्सी पसंद नहीं थी.

वो उस रस्सी से मुक्ति पाना चाहती थी.

ऐडा उस रस्सी को चबाने लगी.

इंडियंस अब अपना
सिर नहीं हिला रहे थे.
"अब," प्रमुख ने कहा.
"हम अभी दादी के घर चुपके से जायेंगे.
फिर जल्दी से हम अपने
बच्चे को वापस लाएंगे."

"हाँ!" बाकी इंडियंस ने
चिल्लाकर अपनी सहमति जताई.
"दादी को पता चलने से पहले ही हम
अपने बच्चे को छीनकर वपिस लाएंगे."
अब नानी को हल्की झपकी आ रही थी.
अब ऐडा रस्सी चबा नहीं रही थी.
अब वो आजाद थी.
वह कमरे के चारों ओर चीज़ें सूंघ रही थी.
बाहर इंडियंस आ रहे थे.
चुपचाप, दबे पांव वे दादी के घर
के चारों ओर घूम रहे थे.
ऐडा ने सूंघकर बिस्तर ढूंढ लिया.
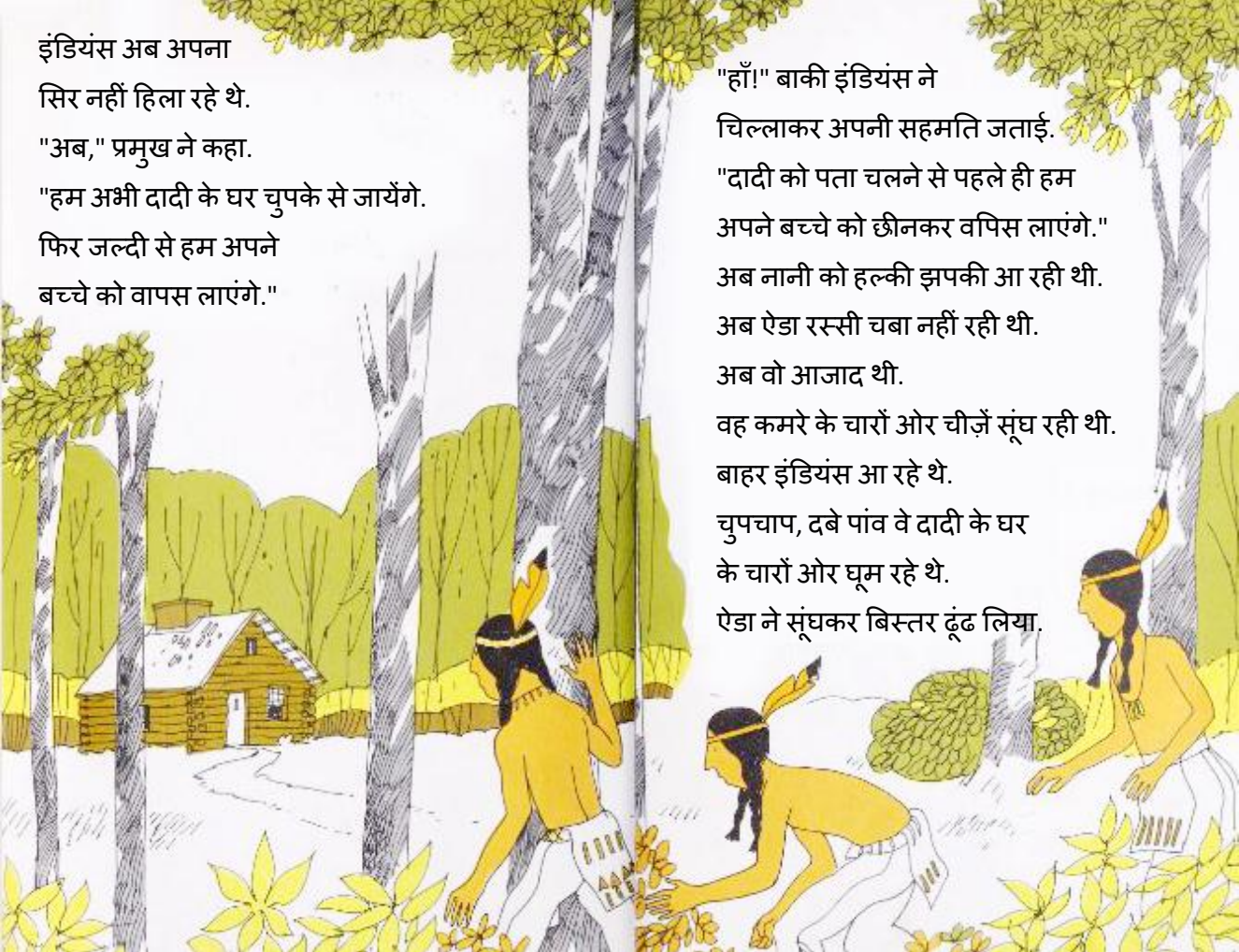
"घुर्र!" ऐडा ने कहा.

"वा!, वा!," बच्चा रोया.

इंडियंस की दादी के दरवाजे के
आसपास भीड़ लग गई.

"भेड़िया!" वे चिल्लाए.

"वो भेड़िया हमारे बच्चे को
खाने जा रहा है."

"घुर्र!" ऐडा ने कहा.

"वा!, वा!," बच्चा रोया.

यह सुनकर दादी उछल पड़ीं.

"भेड़िया!" उन्होंने कहा.

"कौन सा भेड़िया!"

"वो भेड़िया" इंडियंस चिल्लाये.

"ऐडा!" दादी ने कहा.

"ऐडा, एक भेड़िया?"

"घुर्र!" ऐडा ने कहा.

"अरे बाप रे! मैं यकीन कर
सकती हूँ कि वो एक भेड़िए है,"
दादी ने कहा.

ऐडा ने बच्चे को सूँघा.

"वा!," बच्चा रोया.

"नहीं नहीं!" नानी चिल्लाई.

"तुम बच्चे को नहीं ले सकते."

दादी बिस्तर की ओर दौड़कर गयीं.

जल्दी से उन्होंने बच्चे को उठा लिया.

फिर दादी बिस्तर पर कूदीं.

"दूर हो मूर्ख," दादी चिल्लाईं.

ऐडा ने अपना जबड़ा खोला.

उसने अपने पंजे बिस्तर पर रखे.

"घुर्र!," वो घुर्राई.

"नीचे उतरो," दादी चिल्लाई.

लेकिन ऐडा ज़ोर से घुर्राई.

अचानक दादी शेल्फ की ओर लपकीं.

और उन्होंने अपनी बंदूक उठाई.

"गोली मारो! मारो!"

इंडियंस चिल्लाये.
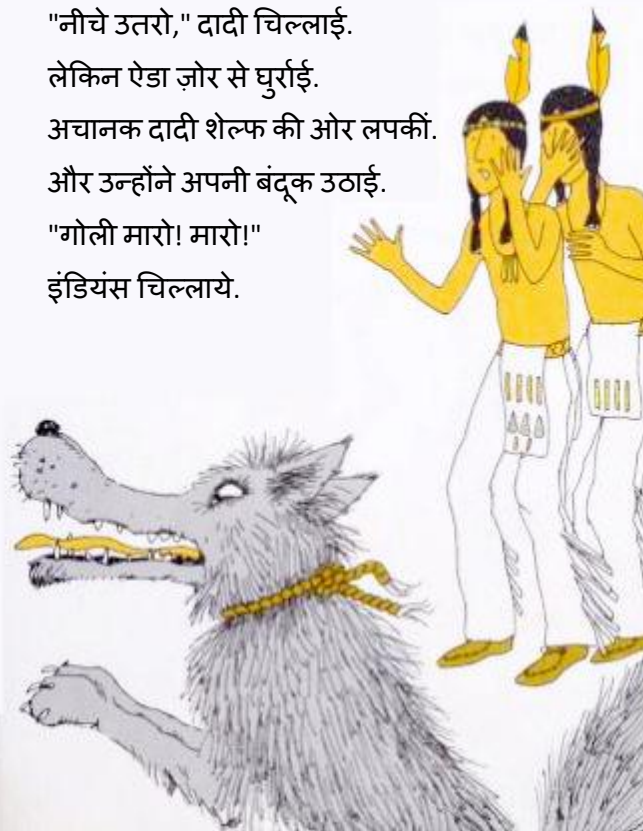
"नहीं नहीं!" प्रमुख ने कहा.
"कहीं वो हमारे बच्चे को गोली न मार दे."
"मूर्खों जैसे बातें मत करो," दादी ने कहा.
"यह बंदूक गोली नहीं चलाती है.
यह बात हर कोई जानता है."
फिर दादी ने ऐडा को सिर पर मारा.
ऐडा बैठ गई.
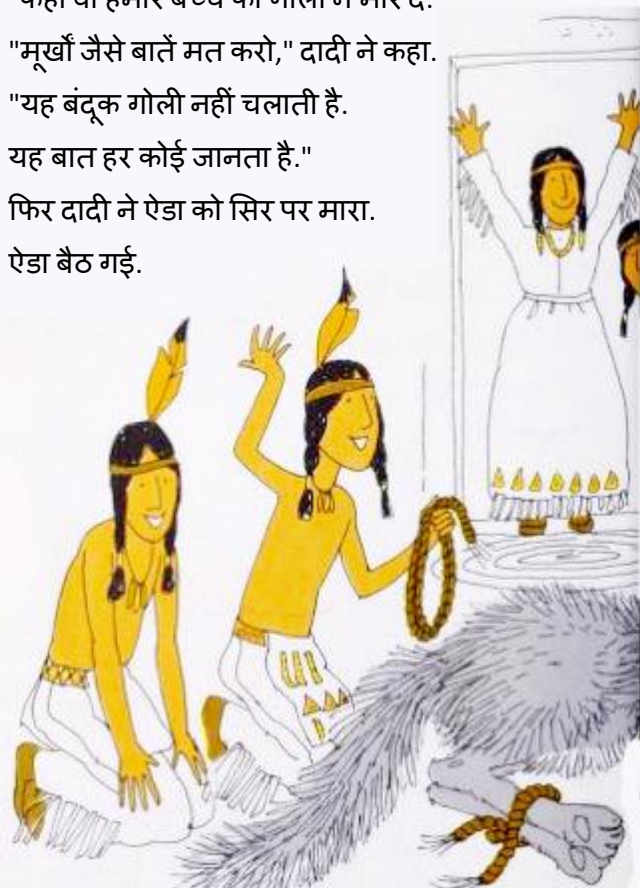
दो इंडियंस भागकर अंदर आये.
उन्होंने जल्दी से ऐडा को बांध दिया.
"हम उसे वापस जंगल में ले जायेंगे,"
उन्होंने कहा.
"हुर्रे," इंडियंस चिल्लाए.
"नानी के लिए हुर्रे.
नानी ने हमारे बच्चे को बचाया.
नानी बहुत अच्छी और नेक हैं."
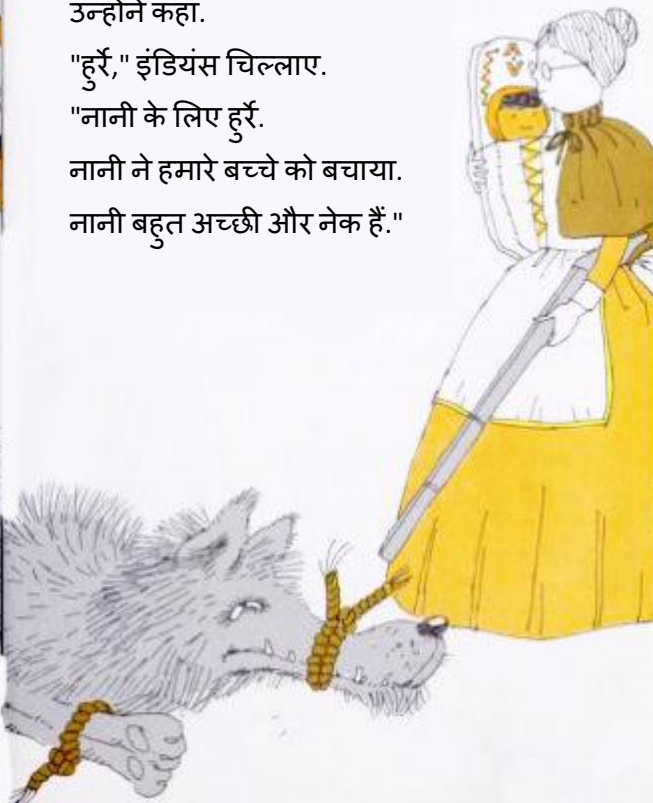
"अब आप लोग अपना हल्ला-गुल्ला
बंद करें," दादी ने कहा.
"बच्चों को शोर पसंद नहीं है.
तुम मेरे बच्चे को परेशान मत करो."
"नहीं, नहीं! यह मेरी बच्ची है,"
एक इंडियन महिला ने कहा.
"कृपया मुझे बच्ची को वापिस दें."
"तुम्हारी बच्ची!" दादी ने कहा.
"क्या यह तुम्हारी बच्ची है?"
बच्ची ने अपनी माँ की आवाज़ सुनी.
"वा!" बच्ची खुशी से चिल्लाई.
"ठीक है. मुझे लगता है कि यह बच्ची
तुम्हारी ही है," दादी ने कहा.
"लेकिन तुमने उसे पेड़ से
लटका कर क्यों रखा?
यह बड़ी मूर्खतापूर्ण बात है."
दादी ने उन्हें बच्चा सौंप दिया.

"अगली बार अगर मुझे पेड़ से
कोई बच्चा लटका हुआ मिला,
तो मैं उसे अपने पास रख लूंगी,"
दादी ने कहा.

उसके बाद, जब कभी नानी जंगल में से होकर जातीं तो वो हमेशा पेड़ों से लटके बच्चों की तलाश करतीं.

लेकिन पेड़ से लटके बच्चे उन्हें फिर कभी नहीं मिले. इंडियंस ने फिर अपने बच्चों को कभी पेड़ से नहीं लटकाया.

समाप्त